

DPN S634

Title : गोपिका स्तुति / GOPIKĀ STUTI

Run. No. 6325

Cat. No.

Micro. No.

Subject तुतः STOTRA

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 9.5 x 6.0

Folios 6

Lines (in a page) 7

Compl. / Incompl.

Chapt. / act / Verses 1-19

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuja. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

श्रीगणेशाय नमः ॥ ↓

प्रजत वेस वन्दे तिम्रो जन्मले लाईने दत्त ज्ञान तिम्रो निम्निले ॥ पिरति हार हे प्राण धर्दधु.
तिमारे हुन सबै कोजि गर्ददत्त ॥ १ ॥

centimeter 5

10

15

20

समाप्ति / colophon

इति गोपिका स्मृतिः ॥

0

15

10

5

0

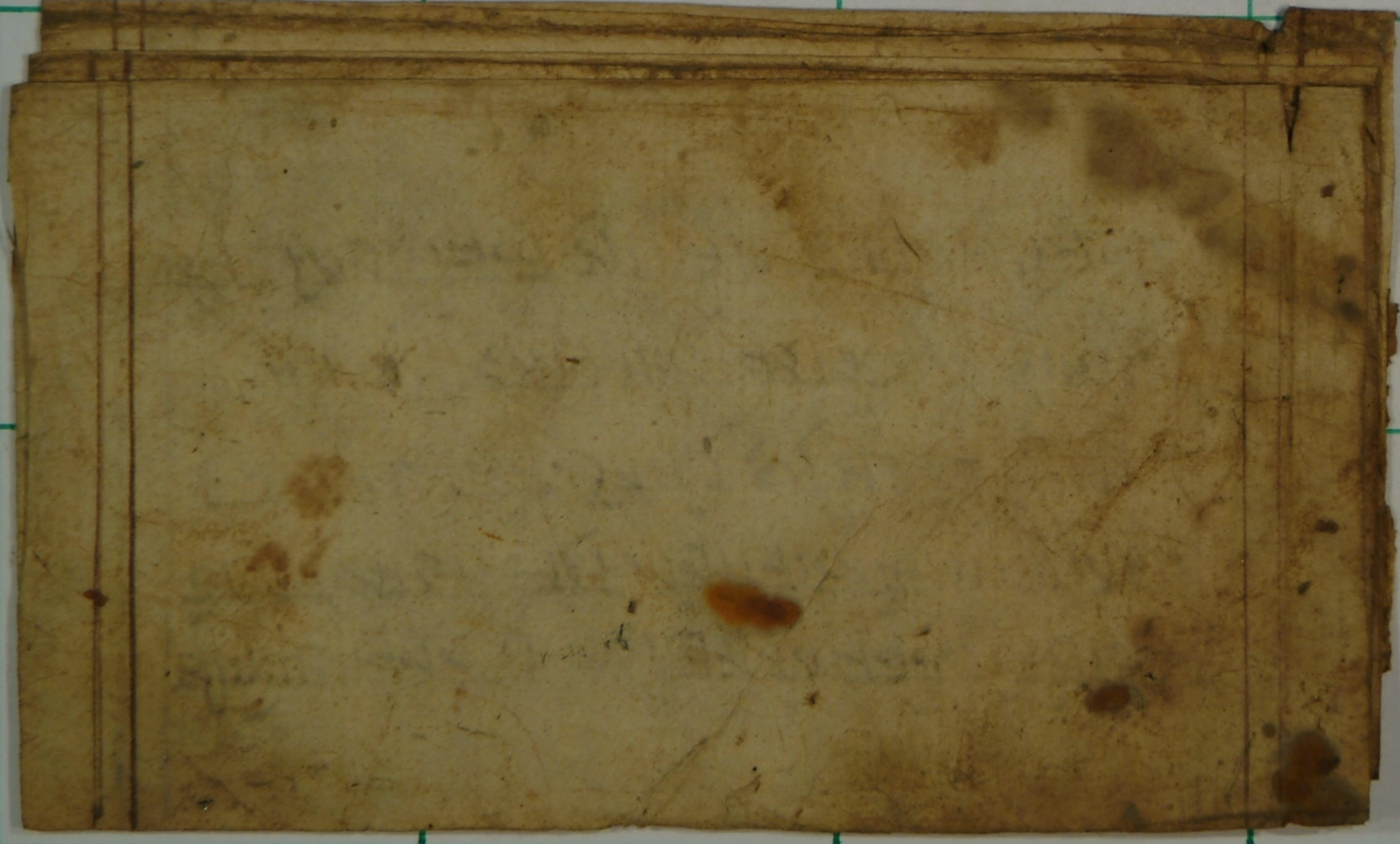
centimeter 5

10

15

20

25



श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ व्रजतवेसवन्ध्यातिष्ठोज्ज्वल
ले त्वस्मिन् जगतामिमांस्त्रिले ॥ पितृतिहार
हे प्राण धर्द्धन् तिमिरे हुन् सेव रेवजिगर्द्ध
न् ॥ १ ॥ सरदमाकमल वशाभेयत्न श्रीहरीदि
न्या तिष्ठानेनैव सुरजनाथ हे हामिदासिका

वद हुं इति किं कामदीपिका ॥ २ ॥ विषरवीषभ
यो व्याल दुष्टभो विजुलि अग्निभो आदिभूष
रीभो ॥ मय किं संतति लोक सतिभो दुःखनि
हर्भयोयति दुःखभो ॥ ३ ॥ तिमिरघानदो पुत्रगो
पिका हृदय साधि दो सर्ववहिका ॥ विधिक विनिले

लोकमालभयोः यदकुलैर्विषेजमलीयो ॥४॥ अ
भयभोगयो जममृत्पूकोचराषाजन्त्याहमिदा
सिको ॥ कर्कमल धोरिदु माथमालक्ष्मीका
जनीसाथहातमा ॥ वजकी दुःखहर्त्रवीरनारि
का मनसगजत्याहमिगेपिका ॥ गर्भहृदति
मिदाभंददं कमलहे असजहर्नदिवदन् ॥६॥
नहनभक्तका पापतामहत्या गोपीद्विचरणका

लीनाग्रमाथ राखीन्या धाकुचैउपकीममनुह
न्या ॥७॥ मधुरसदकावेषवोलीजेबुद्धिनिहा
रकाचिन्नचोरले ॥ अकल्गमभयोहमिदासि
का रसमिजाडहेकलवोटको ॥८॥ अहत
होकथा दुःखदासुदिन्या कविसहाउन्या घाम
काठिन्या ॥ श्रीमुहाउन्या मुनवेसहत्याभर्ज
गाउदा पुन्यधेहुन्या ॥९॥ विहमिलेननरगज

हासनुः समहि रासनु वेस हुं लेषमु ॥ उहिभाहा
बुहि समहि रासनु कल्पी जादु मनु भुर्न सावरो
॥ १० ॥ गोचद्रादे जातु हुं वनु कमल रे चरण
लाल पाउदन् गडी दिनी दी वाप थोरे निरि भानि
निहामरो पाली जादु मनु ॥ ११ ॥ दिन विन्या प
दो विज को सारी कमल रे वदन् शोभ यो ही
॥ दर्शानुगार धुली धरि हृदय मा दोयो का

[illegible]

मदेउभरि ॥१२॥ नमृतदासहिन् वल्लू प्रजित्वा. भूवि
सिंगारन्या समरिवेसहुन्या ॥ चरुगारुषकमल्ल सुख
स्वरूपहुन्या अरकुचे उर्मदुःखहदिन्या ॥१३॥ एतिव
ठाडन्या शोकनाशन्या वज्रतवेनुले स्वादमाइन्या
॥ अरुकरासेवे विमिजाइन्या अमृतबोठको देउमि
ठोहुन्या ॥१४॥ दिनविषे गयो वनविहारमाः पल
कनेत्रको वधभेगयो ॥ पलकलाडन्या हागुनेत्र

माविधिपीने जडे हासिमोददो ॥१५॥ पतिरपुत्र
कल्ल भाई वधुजतेने जाहा हनुतोहिथाडददन्
॥ मिलनबोजददं गीतलोभीदन् युवतिलाई
को एतिदोडददन् ॥१६॥ वोजनेजानिन्या काम
जन्मन्या वदन् हासन्या प्रेमूनजदिन्या ॥ लक्ष्मी
को निवा दानिदेवीन्या कल्योनाइन्या मन्सग
हुन्या ॥१७॥ वजनिवासीको दुःखहुहुन्या निवा

मूर्तिहन् लोकपालता ॥ अर्थात् लाउदाहन् हामि
समस्तान् हृदयस्यका वदहर्दिन्या ॥ १८ ॥ काम
चरलकमलका चार हामि रंभदा विस्तारक एक
चमा भममाना हाथ्या ॥ जातानि सारण लेनि
गवेलना पथ्या गतयादि कृदिनी भाव भेद माउछे
॥ १९ ॥ इति गौरीकाव्यम् ॥